मेरठ: गली-गली में बिक रहा स्प्रिट-पानी वाला नकली सैनिटाइजर

यूपी में कोरोना का कहर तेजी से बढ़ रहा है। वहीं, कोरोना से बचाव के लिए नकली मास्क और सैनिटाइजर का धंधा भी खूब चमक रहा है। यूपी के मेरठ में गली-मोहल्लों में नकली सैनिटाइजर की बिक्री हो रही है।

Edited By Sujeet Upadhyay | नवभारत टाइम्स | Updated: 15 Jun 2020, 08:04:00 PM IST

facebooktwitteremail

सांकेतिक तस्वीर

प्रेमदेव शर्मा, मेरठ

यूपी में कोरोना का कहर तेजी से बढ़ रहा है। वहीं, कोरोना से बचाव के लिए नकली मास्क और सैनिटाइजर का धंधा भी खूब चमक रहा है। यूपी के मेरठ में गली-मोहल्लों में नकली सैनिटाइजर की बिक्री हो रही है। स्प्रिट, पानी, फ्लेवर और थोड़ी सी ग्लिसरीन से सैनिटाइजर तैयार किया जा रहा है। बता दें कि कंकरखेड़ा थाना क्षेत्र के पावली खास रोड पर नकली सैनिटाइजर बनाने वाली फैक्ट्री का पुलिस ने शुक्रवार को भंडाफोड़ करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया था। स्वास्थ्य विभाग ने सलाह दी है कि अधिकृत मेडिकल स्टोर से ही सैनिटाइजर खरीदें।

दरअसल, देश में कोरोना वायरस से निपटने के लिए केंद्र सरकार ने सैनिटाइजर और मास्क से कंट्रोल हटा लिया था। सरकार ने सैनिटाइजर बनाने पर जोर दिया। इसके लिए लाइसेंस भी जारी किए। मास्क और सैनिटाइजर बनाने का नियंत्रण तो सरकार ने अपने पास रखा, लेकिन बिक्री के लिए लाइसेंस की पाबंदी खत्म कर दी। इसका लाभ असामाजिक तत्वों ने उठाया और बाजार में नकली मास्क और सैनिटाइजर की खेप उतार दी। हालत ये है कि गली-मोहल्लों और शहर के चौराहों पर साइकिल और रिक्शा पर मास्क और सैनिटाइजर बेचे जा रहे हैं।

स्प्रिट में पानी मिलाकर बेच रहे नकली सैनिटाइजर

बता दें कि सैनिटाइजर और मास्क के लिए मानक तय हैं। सैनिटाइजर में 80 प्रतिशत इथाइल अल्कोहल और 70 प्रतिशत आईपीए होता है लेकिन फर्जी कंपनियां सैनिटाइजर के नाम पर स्प्रिट में पानी मिलाकर मोटा मुनाफा वसूल रही हैं। मानकों का ध्यान नहीं रखने की वजह से ये जानलेवा हो सकती हैं। लोग यह सोचकर नकली सैनिटाइजर और मास्क का प्रयोग करते रहेंगे कि वह सुरक्षित हैं।

जान के लिए आफत

दवा कारोबारी रजनीश कौशल का कहना है कि मास्क और सैनिटाइजर को मजबूती के साथ ड्रग एक्ट में शामिल करना चाहिए। लगाम नहीं कसी गई तो नकली मास्क और सैनिटाइजर का फैलता जाल लोगों की जान के लिए आफत बन जाएगा। वहीं, बाजार में मास्क की मांग बढ़ते ही उनका जगह-जगह निर्माण शुरू हो गया। प्लास्टिक, बैग बनाने में इस्तेमाल होने वाली जाली सहित कुछ अन्य सामग्री का नकली मास्क में प्रयोग हो रहा है। जाली वाले मास्क पर धूल जम जाती है। जो धीरे-धीरे मुंह के रास्ते शरीर में जाकर नुकसान पहुंचाती है।

स्किन से जुड़ी शिकायत

प्लास्टिक के चलते स्किन से जुड़ी शिकायत सामने आ रही है। स्किन रोग विशेषज्ञ डॉ अजय शर्मा का कहना है कि नकली सैनिटाइजर इस्तेमाल करने से स्किन में जलन शुरू हो जाएगी। स्किन लाल हो जाएगी। फफोले भी पड़ सकते हैं। हार्ड केमिकल का इस्तेमाल हाथों के लिए खतरनाक होता है। जलन या स्किन लाल होने पर तुरंत इस तरह के घटिया सैनिटाइजर का इस्तेमाल बंद कर देना चाहिए।

नकली सामान के खिलाफ चलेगा अभियान

ड्रग इंस्पेक्टर पवन शाक्य का कहना है कि नकली सामान की शिकायत मिली है। इसके खिलाफ अभियान चलाया जाएगा। ड्रग इंस्पेक्टर का कहना है कि ब्रांडेड सैनिटाइजर खरीदना सबसे सही है। अगर कोई दूसरी अनजान कंपनी का सैनिटाइजर मिल रहा है तो पूरी डिटेल पढ़ लें। 99.9 प्रतिशत बैक्टिरिया खत्म करने का दावा करने वाले प्रोडक्ट पर लाइसेंस नंबर जरूर होगा। अगर उस पर लाइसेंस नंबर न हो तो उसे न खरीदें। इसके अलावा प्रोडक्ट पर मैन्यूफैक्चर्स का पता, बैच नंबर समेत एक्सपायरी डेट जरूर चेक कर लें। उसको ऑनलाइन भी चेक कर सकते हैं।

साबुन का कर सकते हैं इस्तेमाल

यूपी फार्मेसी काउंसिल के पूर्व चेयरमैन और वरिष्ठ फार्मासिस्ट सुनील यादव के मुताबिक बाजार में कई तरह के सैनिटाइजर उपलब्ध हैं। असली सैनिटाइजर की पहचान जरूरी है। जो सैनिटाइजर सही होगा वह थोड़ा हाथ पर ठंडा सा लगेगा और बहुत जल्दी सूख जाएगा। चिपचिपा नहीं होगा। ज्यादातर अल्कोहल से तैयार सैनिटाइजर वायरस वैक्टीरिया को मारने के लिए अच्छे होते हैं। उन्होंने बताया कि वैसे साबुन से हाथ धोना सबसे अच्छा होता है। हाथ धोते समय यह सावधानी रखे कि साबुन का झाग जब तक न निकलने लगे तब तक रगड़ते रहे और उल्टा, सीधा, फिर मुट्ठी बांधकर, अंगूठे, नाखूनों और कलाई को पूरी तरह से रगड़ कर साबुन से साफ करना है।

Source: https://navbharattimes.indiatimes.com/state/uttar-pradesh/meerut/meerut-spirit-water-mix-fake-sanitizer-being-sold-in-street/articleshow/76389933.cms